दस्तावेज/रिपोर्ट

लघु और मध्यम उ
समस्याएँ व स पर
हिंदी में आयोजित तीसरा राष्ट्रीय सेमिनार- रिपोर्ट

कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, भारतीय रिज़र्व बैंक, पुणे ने पंजाब नैशनल बैंक के सहयोग से सोमवार, 21 मई 2007 को पंजाब नैशनल बैंक के नई दिल्ली स्थित केंद्रीय स्टाफ कॉलेज में "लघु और मध्यम उद्यम-समस्याएं और समाधान" पर हिंदी में तीसरा राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया था।

सेमिनार के उद्घाटन समारोह के अवसर पर मंच पर आसीन मुख्य अतिथि श्री वी एस दास (रिज़र्व बैंक के कार्यपालक निदेशक) (बायें से तीसरे) तथा श्री आर रघुरामन (पंजाब नैशनल बैंक के कार्यपालक निदेशक) बांये से चौथे।

इस सेमिनार के उद्घाटन समारोह में भारतीय रिज़र्व बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री वी एस दास मुख्य अतिथि एवं पंजाब नैशनल बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री आर रघुरामन अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री दास ने दीप प्रज्वलन के साथ किया। इनके अलावा पंजाब नैशनल बैंक के महाप्रबंधक श्री पी के मित्रा, श्री वी के नागर और भारतीय रिज़र्व बैंक के नई दिल्ली कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक श्री ए उद्गाता भी उद्घाटन सत्र में उपस्थित थे। सर्वप्रथम श्री वी के नागर, महाप्रबंधक ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात् भारतीय रिज़र्व बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री वी एस दास ने मुख्य अतिथि के रूप में अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए लघु और मध्यम उद्यमों को भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के पहियों की संज्ञा दी और कहा कि लघु और मध्यम उद्यम (एसएमई) उद्यमशीलता को बढ़ावा प्रदान करते हैं जिससे रोजगार के अवसरों में इज़ाफा होता है। उन्होंने महात्मा गांधी को उद्धृत करते हुए कहा बापू का यह मानना था कि जब तक कतार में खड़े आखिरी आदमी को काम और रोटी नहीं मिल जाती तब तक हमारी आजादी सच्ची नहीं हो सकती। एसएमई सेक्टर के सम्मुख आनेवाली दिक्कतों का जिक्र करते हुए उन्होंने उनकी समस्याओं को दो वर्गों में विभक्त किया- एक ऋण से जुड़ी और दूसरी मूलभूत नीतिगत आवश्य-कताओं से जुड़ी हुई। उनके अनुसार ऋण से जुड़े पहलुओं पर देश के बैंकिंग उद्योग को ध्यान देना होगा तो ढांचागत अपेक्षाओं के लिए सरकार को कदम उठाने होंगे। इस संदर्भ में उन्होंने वित्तमंत्री द्वारा 10 अगस्त 2005 को घोषित पैकेज और एसएमई डेवलपमेंट एक्ट 2006 का जिक्र किया और कहा कि इनके अनुसार बैंकों से जो अपेक्षाएं हैं उनके बारे में भारतीय रिज़र्व बैंक ने दिनांक 4 और 30 अप्रैल 2007 को परिपत्र जारी कर बैंकों को अवगत कराया है। अपने अपने वक्तव्य के आखिर में उन्होंने एसएमई सेक्टर का आह्वान करते हुए कहा कि उसे अपने नाम के आगे से Tiny, Micro और Small जैसे शब्दों को हटाकर अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपने बलबूते पैर जमाने की कोशिश करनी होगी और उसी में इस क्षेत्र के साथ-साथ हमारे देश की अर्थव्यवस्था का विकास भी निहित है।

पंजाब नैशनल बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री आर रघुरामन ने अपना अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा कि देश में स्थापित कुल औद्योगिक इकाइयों में लगभग 95 प्रतिशत की भागीदारी और 3 करोड़ लोगों को रोजगार उपलब्ध कराकर यह क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। उन्होंने यह स्वीकार किया कि इस क्षेत्र को बैंकों द्वारा दिए जा रहे

प्रस्तुती -श्रीमती सावित्री सिंह, सहायक महाप्रबंधक, कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, पुणे

ऋणों की मात्रा में निरंतर वृद्धि हो रही है लेकिन वह मांग के अनुरूप अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतर पा रही है। अतएव बैंकों को इस ओर तत्काल ध्यान देना चाहिए और इस क्षेत्र में मौजूद संभावनाओं का पूरी तरह से दोहन करने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने यह माना कि सरकार द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण नीतिगत कदम लघु और मध्यम उद्यमों के विकास में मील का पत्थर साबित होंगे। उन्होंने ऐसे प्रासंगिक विषय पर सेमिनार आयोजित करने के लिए कृषि बैंकिंग महाविद्यालय का आभार व्यक्त करते हुए आशा व्यक्त की कि सेमिनार अपने उद्देश्यों में सफल होगा।

इस सत्र के दौरान प्रशिक्षण समन्वय समिति के तत्वावधान में चलाई जा रही पुस्तक लेखन योजना के अंतर्गत इस बीच प्रकाशित दो पुस्तकों का लाकार्पण किया गया जिसमें महाविद्यालय में कार्यरत श्रीमती सावित्री सिंह की पुस्तक "समय प्रबंधन और संगठनात्मक विकास" और भारतीय रिज़र्व बैंक के केंद्रीय कार्यालय में कार्यरत डॉ दलसिंगार यादव व महाविद्यालय के संकाय सदस्य श्री श्रीमोहन यादव द्वारा संयुक्त रूप से "लघु और मध्यम उद्यम : समस्याएँ व समाधान" पर लिखी गई पुस्तक का समावेश है। इसके अलावा 16 अक्तूबर 2006 को बेंगलूर में कृषि बैंकिंग महाविद्यालय और विजया बैंक के सौजन्य से ठलघु वित्तड पर आयोजित दूसरे सेमिनार में प्रस्तुत आलेखों की संपादित पुस्तक का लोकार्पण भी किया गया।

चाय अवकाश के पश्चात पहला कारोबारी सत्र "लघु और मध्यम उद्यमों के लिए नीतिगत ढांचा" पर आरंभ हुआ। इस सत्र के दौरान कुल चार आलेख प्रस्तुत किए गए। पहला आलेख रिज़र्व बैंक के डॉ दलसिंगार यादव ने "लघु और मध्यम उद्यमों के संबंध में सरकार के नीतिगत पहल एवं योजनाएं" पर प्रस्तुत किया। उनके अलावा सिडबी, लखनऊ की उप महाप्रबंधक सुश्री अनिता सचदेवा ने "लघु और मध्यम उद्यमों के विकास के लिए संरचनागत ढांचे के विकास से जुड़े मुद्दे"; स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर के श्री के सुंदरराजन ने "समूह विकास का मूल्यांकन" और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के श्री मनोहर गजपल्ला ने "आरक्षित गतिविधियां बनाम विनियमन" पर आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता पंजाब नैशनल बैंक के महाप्रबंधक श्री वी के नागर ने की और संचालन किया श्री एस सी मल्लिक, सहायक महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक ने।

भोजन के बाद आरंभ हुए दूसरे कारोबारी सत्र में "लघु और मध्यम उद्यमों के वित्तपोषण से जुड़े मुद्दों" पर चर्चा की गई। इस सत्र में पंजाब नैशनल बैंक के श्री जी एस गुसाईं ने "लघु और मध्यम उद्यमों की रेटिंग:नए बदलाव की ओर"; बैंक ऑफ इंडिया के श्री एस वी अत्रे ने "लघु और मध्यम उद्यमों के वित्तपोषण हेतु नए आयाम"; इलाहाबाद बैंक के श्री संदीप कुमार घोषाल ने "लघु और मध्यम उद्यमों के वित्तपोषण में जोखिमों पर नियंत्रण" और पंजाब नैशनल बैंक के दिल्ली स्थित आंचलिक प्रशिक्षण केंद्र के संकाय सदस्य डॉ अश्विनी कुमार अग्रवाल ने "अति लघु और लघु उद्यम:भावी चुनौतियों के लिए तैयारियां" पर अत्यंत ज्ञानवर्द्धक आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता कार्पोरेशन बैंक के महाप्रबंधक श्री एम के नायक ने की और संचालन श्री सूरज प्रकाश, सहायक महाप्रबंधक, कृषि बैंकिंग महाविद्यालय ने किया।

तीसरा कारोबारी सत्र "ऋणेतर सुविधाएं:नवोन्मेष और उद्यमिता का विकास" विषय को समर्पित था। इस सत्र में कृषि बैंकिंग महाविद्यालय के उप महाप्रबंधक श्री श्रीमोहन यादव ने "लघु और मध्यम उद्यमों के वित्तपोषण की सर्वोत्तम प्रथाएं:एक अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य"; इंडियन ओवरसीज बैंक के श्री राजेंद्र सिंह ने "लघु और मध्यम उद्यमों में उद्यमिता विकास"; पंजाब नैशनल बैंक के केंद्रीय स्टाफ कॉलेज के संकाय सदस्य श्री डी साहू ने "सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यमों को वित्त देने में सूचना असंगति को कम करना: ऋण प्रबंधन की भूमिका" और आइडीबीआइ बैंक के श्री प्रभुदयाल यादव ने "भारत में जोखिम पूंजी और लघु और मध्यम उद्यमों का वित्तपोषण" पर अत्यंत सारगर्भित आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र के अध्यक्ष थे बैंक ऑफ इंडिया के उप महाप्रबंधक श्री धर्मपाल गोगिया और सत्र संचालन किया पंजाब नैशनल बैंक के आइटी सेंटर के प्रधानाचार्य श्री विजय दुबे ने।

सेमिनार के समापन सत्र में तीनों कारोबारी सत्रों में प्रस्तुत किए गए आलेखों और उनके प्रस्तुतीकरण के दौरान हुई चर्चा का अत्यंत सारगर्भित सारांश केनरा बैंक, लखनऊ के श्री ए के पांडेय ने बहुत ही सधे हुए शब्दों में प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता की पंजाब नैशनल बैंक के मुख्य महाप्रबंधक श्री बी एम मित्तल ने और मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय रिज़र्व बैंक, नई दिल्ली कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक श्री ए उद्‌गाता उपस्थित थे। समापन सत्र का संचालन किया कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, पुणे की श्रीमती सावित्री सिंह ने और आभार प्रदर्शन का दायित्व केंद्रीय स्टाफ कॉलेज, पंजाब नैशनल बैंक के प्रधानाचार्य श्री आर पी शर्मा ने निभाया।

पंजाब नैशनल बैंक द्वारा वित्तपोषित नई दिल्ली और आस पास के इलाकों में स्थित कई सफल लघु उद्यमियों ने इस सेमिनार के दौरान एक छोटी सी प्रदर्शनी भी लगाई थी जिसमें चमड़े से बनी वस्तुओं से लेकर कपड़े, प्रोसेस्ड फूड और कैमरा जैसे इलेक्टानिक उत्पादों का समावेश था। इन इकाइयों की सफलता लघु और मध्यम उद्यमों की प्रगति की परिचायक है।

इस सेमिनार में देश के कोने-कोने से विभिन्न बैंकों से आए लगभग 100 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। देश की राजधानी में बैंकिंग विषयों पर हिंदी में संपन्न हुआ यह सेमिनार अपने आप में एक अनूठा आयोजन साबित हुआ।